राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर

(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्, बेंगलूरु द्वारा B** ग्रेड से प्रत्यायित)

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा अनुदानित व दर्शनशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित

आवधिक व्याख्यान

दिनांक : 18 फरवरी 2019

विषय : भारतीय संस्कृति में निहित मौलिक मूल्य तथा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में उनकी प्रासंगिकता

कार्यक्रम आख्या

दिनांक 18.02.2019 को राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर के दर्शनशास्त्र विभाग में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा अनुदानित आवधिक व्याख्यान–माला आयोजित की गयी। इस आवधिक व्याख्यानमाला में प्रो0(डॉ0) ए0के0 राय, पूर्व विभागाध्यक्ष, दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने "भारतीय संस्कृति के उदात्त तत्व" विषय पर विद्वत व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसी क्रम में प्रो0(डॉ0)डी0एन0 तिवारी, पूर्व विभागाध्यक्ष, दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी ने "भारतीय संस्कृति में मूल्य और उनकी सामयिक प्रासंगिकता " विषय पर ज्ञानवर्द्धक व्याख्यान प्रस्तुत किया।

आवधिक व्याख्यान के इस कार्यक्रम में महाविद्यालय की छात्राएं, शोधछात्र, शिक्षकगण एवं गाजीपुर जनपद के प्रबुद्धगण आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो0(डॉ0) सविता भारद्वाज ने की। आवधिक व्याख्यान के इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों एवं शिक्षकगण ने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में मूल्यों की भूमिका के संदर्भ में अपनी जिज्ञासाएं रखी, जिनका अतिथि व्याख्याताओं ने मार्गदर्शन व निराकरण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम आयोजन हेतु सहयोग के लिए महाविद्यालय परिवार एवं दर्शनशास्त्र विभाग भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

संलग्नक :

1. भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रेषित अनुदान पत्र की छाया प्रति।
2. प्रो0(डॉ0) ए0के0 राय द्वारा प्रस्तुत व्याख्यान की सारांशिका।
3. प्रो0(डॉ0) डी0एन0 तिवारी द्वारा प्रस्तुत व्याख्यान की सारांशिका।
4. कार्यक्रम की फोटो।
5. प्रतिभागियों के फीडबैक की छायाप्रति।
6. समाचार पत्रों में 'आवधिक व्याख्यान माला' सम्बंधी समाचार की छायाप्रति।
7. व्यय विवरण एवं मूल बिल/बाउचर।

11.3.19

प्रो0(डा0) सविता भारद्वाज
प्राचार्य
रा0म0स्ना0महाविद्यालय,गाजीपुर

Amit Yadav

डा0 अमित यादव
कार्यक्रम संयोजक
असिस्टेंस प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र
रा0म0स्ना0महाविद्यालय,गाजीपुर

भारतीय संस्कृति में मूल्य और उनकी सामयिक प्रासंगिकता

➢ प्रो०(डॉ०) डी०एन० तिवारी

मूल्यों के उपर बहुत सी चर्चायें अनवरत जारी है। जो लोग मूल्यों के संवर्द्धन में लगे हुए है, उनका भी मानना है कि कहीं न कहीं जीवन में मूल्यों का ह्रास हुआ है।

विभिन्न धार्मिक ग्रंथो में विविध मूल्यों की चर्चा की गयी है। मूल्य जड़वादी नहीं है, मूल्य चेतना से प्रार्दुभूत है। मूल्यों का निर्माता कौन है? वस्तुतः हमारा जन्म भी कर्म–मूल्यों के प्रतिपादन से हुआ है। हमारे जीवन के कर्त्तव्य मूल्यों को जन्म देते है। हमारा अन्य के प्रति आचरण व व्यवहार भी मूल्यवान है, जो अन्य में सुखात्मक अनुभूति को जन्म देता है।

मानव जीवन पर अनेक ऋण माने गये है पितृऋण, ऋषिऋण, देवऋण आदि। प्रकृति/भूत के प्रति ऋण हमें पर्यावरण में स्थित मूल्यों से साक्षत्कार कराता है। हमारी सांस्कृतिक विरासत ऐसी रही है। जिसमें हमने संसार के साथ सहकार का सहःअस्तित्व का भाव मिलता है। प्रत्येक वस्तु में देवत्व है।

सेवा और श्रम रुपी मूल्य हमारी संस्कृति का परिचायक है। हमारी संस्कृति भोगवादी नही अपितु श्रम और सेवा से उत्पन्न मूल्यों की सहगामिनी है। सभी में देवत्वांश है। सभी सम्माननीय है। सभी के साथ समान भाव व आचरण करना चाहिए। स्वच्छता के साथ–साथ सम्पूर्ण समाज की स्वच्छता के लिए कार्य करें।

प्रत्येक मनुष्य में देवत्व है। सभी में परमतत्व की ज्योति है। अतः जब हम मनुष्य की इस रुप मे पहचान करते है तो वह एकमूल्य के रुप में हमारे समक्ष प्रकट होता है। लेकिन जब हम किसी की पहचान उसके सांसारिक नाम जैसे सीता, मनीषा, सुरेश से करते है और उसे सम्पूर्ण मान लेते है तो कहीं न कहीं हम उसमें निहित आध्यात्मि मूल्य की उपेक्षा कर देते है।

शिक्षा के क्षेत्र में यदि हम देखे तो एक ही शिक्षा प्राप्त अनेक व्यक्तियों में से कुछ विकासात्मक तो कुछ विनाशात्मक प्रकार की गतिविधियों में संलग्न होते है। जब हम ऋषि ऋण को स्वीकार करते है। तब हम प्राप्त शिक्षा का प्रयोग लोक कल्याण में करते है। किन्तु जब हम ऋषि ऋण को स्वीकार नहीं करते तो उसी

ज्ञान का प्रयोग विध्वंशक कार्यो मे करने लगते है। ऋण लेना मूल्य नही है। लेकिन उऋण होना एक महत्वपूर्ण मूल्य है।

शिक्षा एक महत्वपूर्ण मूल्य है। समाज में आज जो विसंगतियां दिख रही है। उनका कारण शिक्षा रुपी मूल्य का विस्मरण होना है। शिक्षा या ज्ञान आत्मा का संस्कार है। शिक्षा रुपी मूल्य बौद्धिक विकास को उद्वेलित करता है। अमेरिकी समाज में वर्तमान समय में निर्णय को सुख के समतुल्य माने जाने की प्रकृति चल रही है । किन्तु सुख भावना का विषय है। जबकी निर्णय बुद्धि का क्षेत्र है। हमारी संस्कृति में सुख अंतिम लक्ष्य नहीं है। बौद्धिक मानसिंक शारीरिक सभी मूल्यों की रक्षा होनी चाहिए। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन रहता है और इसी से सकारात्मक बौद्धिक विकास संभव हो सकता है।

अपने मस्तिष्क को सदैव नवीन विचारों के स्वागत के लिए तैयार रखना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य में विकास की अनंत संभावनाए है । जिसे निरंतर अपने प्रयासों से मूर्तमान रुप दिया जा सकता है। आधुनिक संचार की तकनीको ने मानव स्मृति को विपरित रुप से प्रभावित किया है। मनुष्य मशीनों पर निर्भर होता जा रहा है। जो जिससे उसकी मानसिक क्षमताएं कुंद हो रही है।

पुरुषार्थ रुपी मूल्य हमारी संस्कृति की अनुपम देन है। धर्म, अर्थ व काम का विवेकपूर्ण प्रयोग मूल्यों की स्थापना व संवर्द्धन करता है। इसके अनुरुप आश्रम व्यवस्था भी भारतीय संस्कृति में वर्णित है।

वर्तमान पर्यावरणीय, सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक क्षेत्र में जो मूल्यों का अवमूल्यन दिखाई पड़ रहा है उसका मूल कारण यही है कि हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को विस्मृत कर रहे है। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए हमें मूल्यों की ओर पुनः लोटना पड़ेगा।

Dear Amit ji,
Thanks for the periodical lecture organised in your college.
D. N. Tiwari
18/02/2019

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर, उ.प्र.-233001

(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद, बेंगलुरू द्वारा B++ ग्रेड से प्रत्यायित)

कार्यालय : 0548-2220363 आवास : 0548-2220839
मोबाइल : .....

Website : www.gwpgc.ac.in
E-mail : ggpgc09@gmail.com, FAX : 0548-2220363

सेवा में,

श्री उपेन्द्र कुमार (निदेशक)
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद,
नई दिल्ली।

पत्रांकः 659 /2018–19 दिनांक 11.03.2019

विषयः– आवधिक व्याख्यानोंपरांत रिपोर्ट के सन्दर्भ में।

महोदय,

सादर सूच्य है कि आपके पत्र संख्यॉ F.No.12–1/2018/P&R/ICPR/20 दिनांक 13 नवम्बर, 2018 के अनुकम में दर्शनशास्त्र विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर में आवधिक व्याख्यान दिनांक 18.02.2019 को आयोजित करने के उपरांत कार्यकम सम्बंधी वांछित विवरण इस पत्र के साथ संलग्न कर आपकी सेवा में प्रेषित है।

सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

संलग्नक :

1. कार्यकम आख्या।
2. भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रेषित अनुदान पत्र की छाया प्रति।
3. प्रो0(डॉ0) ए0के0 राय द्वारा प्रस्तुत व्याख्यान की सारांशिका।
4. प्रो0(डॉ0) डी0एन0 तिवारी द्वारा प्रस्तुत व्याख्यान की सारांशिका।
5. कार्यक्रम की फोटो।
6. प्रतिभागियों के फीडबैक की छायाप्रति।
7. समाचार पत्रों में 'आवधिक व्याख्यान माला' सम्बंधी समाचार की छायाप्रति।
8. व्यय विवरण एवं मूल बिल/बाउचर।

11.3.19

प्रो0(डा0) सविता भारद्वाज
प्राचार्य
रा0म0स्ना0महाविद्यालय,गाजीपुर

Amit Yadav

डा0 अमित यादव
कार्यक्रम संयोजक
असिस्टेंस प्रोफेसर दर्शनशास्त्र
रा0म0स्ना0महाविद्यालय,गाजीपुर

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद

डिजिटल क्रांति ने विकेंद्रीकरण को दिया बढ़ावा

राजकीय महिला महाविद्यालय में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद की ओर से व्याख्यान माला का आयोजन

अमर उजाला ब्यूरो

गाजीपुर। राजकीय महिला महाविद्यालय में दर्शनशास्त्र विभाग में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद की ओर से 'भारतीय संस्कृति में निहित मौलिक मूल्य एवं राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में उनकी भूमिका' विषयक व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ सरस्वती प्रतिमा पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के दर्शन एवं धर्म विभाग के प्रो. एके राय एवं प्रो. डीएन तिवारी इस व्याख्यान माला के प्रमुख वक्ता रहे। प्रो. राय ने कहा कि जिन मानवीय मूल्यों को मनुष्य चाहते हुए भी अंगीकार नहीं कर पा रहा उसे सवारने संभालने में संस्थाएं मददगार साबित हो रही हैं। संस्कृति मानव जीवन को संभव एवं सफल बनाती है।

डिजिटल क्रांति को वरदान बताते हुए प्रो. राय ने कहा कि इसने विकेंद्रीकरण को बढ़ावा दिया। केंद्रीकरण को न्यूनतम करने में

वक्ता बोले, संस्कृति मानव जीवन को संभव एवं सफल बनाती है

एकात्म भाव की कमी से व्यक्ति, व्यक्ति से दूर होता जा रहा

अपना महती योगदान दिया है। प्रो. डीएन तिवारी ने मानव जीवन के ऋणों से उऋण होने का संदेश दिया, जिससे समाज में इति कर्तव्यता का बोध विकसित हो। उन्होंने बताया कि एकात्म भाव की कमी से व्यक्ति, व्यक्ति से दूर होता जा रहा है और सामाजिक विषमता, भेदभाव का शिकार हो रहा है। जबकि संपूर्ण सृष्टि में एक ही परम तत्व की ज्योति प्रज्ज्वलित है।

महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. सविता भारद्वाज ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति का मूल तत्व एकत्व भाव है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति जय जगत को

शहर के राजकीय महिला पीजी कालेज में आयोजित संगोष्ठी में बोलते वक्ता। अमर उजाला

स्वीकार करते है, विश्व बंधुत्व को स्वीकार करती है। व्याख्यान माला के आयोजक डॉ. अमित यादव ने कहा कि भेदों में भी अभेद निहित है। सभी भेद इस कारण है कि मनुष्य ने अपने चारों तरफ एक घेरा बना रखा है और उसे ही संपूर्ण मान लिया जब तक इस घेरे का विस्तार कर उसमें सभी मानव जाति एवं प्रकृति को सम्मिलित नहीं किया जाएगा अर्थात एकात्म के भाव को जागृत नहीं किया जाएगा तब तक समाज में भेदभाव, ऊंच-नीच, पर्यावरण अपकर्ष जैसी चीजों को समाप्त नहीं किया सकता। कार्यक्रम में महाविद्यालय की छात्राएं, विभिन्न विभागों के शोध छात्र, महाविद्यालय के सभी अध्यापकों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

संस्कृति मानव को बनाती है सफल : प्रो. एके राय

गाजीपुर | निज संवाददाता

आयोजन

- भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद की ओर से व्याख्यानमाला
- राजकीय महिला पीजी कालेज में छात्राओं को दी गई जानकारी

राजकीय महिला महाविद्यालय में सोमवार की शाम दर्शनशास्त्र विभाग में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद की ओर से अनुदानित व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इसका शीर्षक 'भारतीय संस्कृति में निहित मौलिक मूल्य एवं राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में उनकी भूमिका' रहा। मां सरस्वती प्रतिमा पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। दर्शन एवं धर्म विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रो. एके राय व प्रो. डीएन तिवारी इस व्याख्यानमाला के प्रमुख वक्ता रहे।

प्रो. एके राय ने भारतीय संस्कृत के उदात्त तत्व विषय पर व्याख्यान दिया। कहा कि व्यक्ति और संस्थाओं के मध्य गत्यात्मक संबंध के माध्यम से समाज में मूल्यों की स्थापना की गयी है। किस प्रकार से जिन मानवीय मूल्यों को मनुष्य चाहते हुए भी अंगीकार नहीं कर पा रहा, उसे संवारने-संभालने में संस्थायें मददगार साबित हो रही हैं।

कहा कि संस्कृति मानव जीवन को संभव व सफल बनाती है। डिजिटल क्रांति को वरदान बताते हुए कहा कि इसने विकेंद्रीकरण को बढ़ावा दिया और

राजकीय महिला पीजी कालेज में अतिथि को सम्मानित करती प्राचार्या प्रो. सविता भारद्वाज।

केंद्रीकरण को न्यूनतम करने में अपना महती योगदान दिया है। प्रो. डीएन तिवारी ने मानव जीवन के ऋणों से उऋण होने का संदेश दिया। इससे समाज में इति कर्तव्यता का बोध विकसित हो। महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. सविता भारद्वाज ने कहा कि भारतीय संस्कृति का मूल तत्व एकत्व भाव है। भारतीय सभ्यता व संस्कृति 'जय जगत' को स्वीकार करती है। विश्व बंधुत्व को स्वीकार करती है।

व्याख्यान माला के आयोजक डा. अमित यादव ने कहा कि भेदों में भी अभेद निहित है। समस्त भेद इस कारण है कि मनुष्य ने अपने चारों तरफ एक घेरा बना रखा है और उसे ही संपूर्ण मान लिया, जब तक इस घेरे का विस्तार कर उसमें समस्त मानव जाति व प्रकृति को सम्मिलित नहीं किया जाएगा अर्थात एकात्म के भाव को जागृत नहीं किया जाएगा, तब तक समाज में भेदभाव ऊंच-नीच, पर्यावरण अपकर्ष जैसी चीजों को समाप्त नहीं किया सकता। इससे पूर्व आयोजक डा. अमित यादव ने अतिथियों का स्वागत एवं औपचारिक परिचय प्रस्तुत की।